पसीना बोलता है

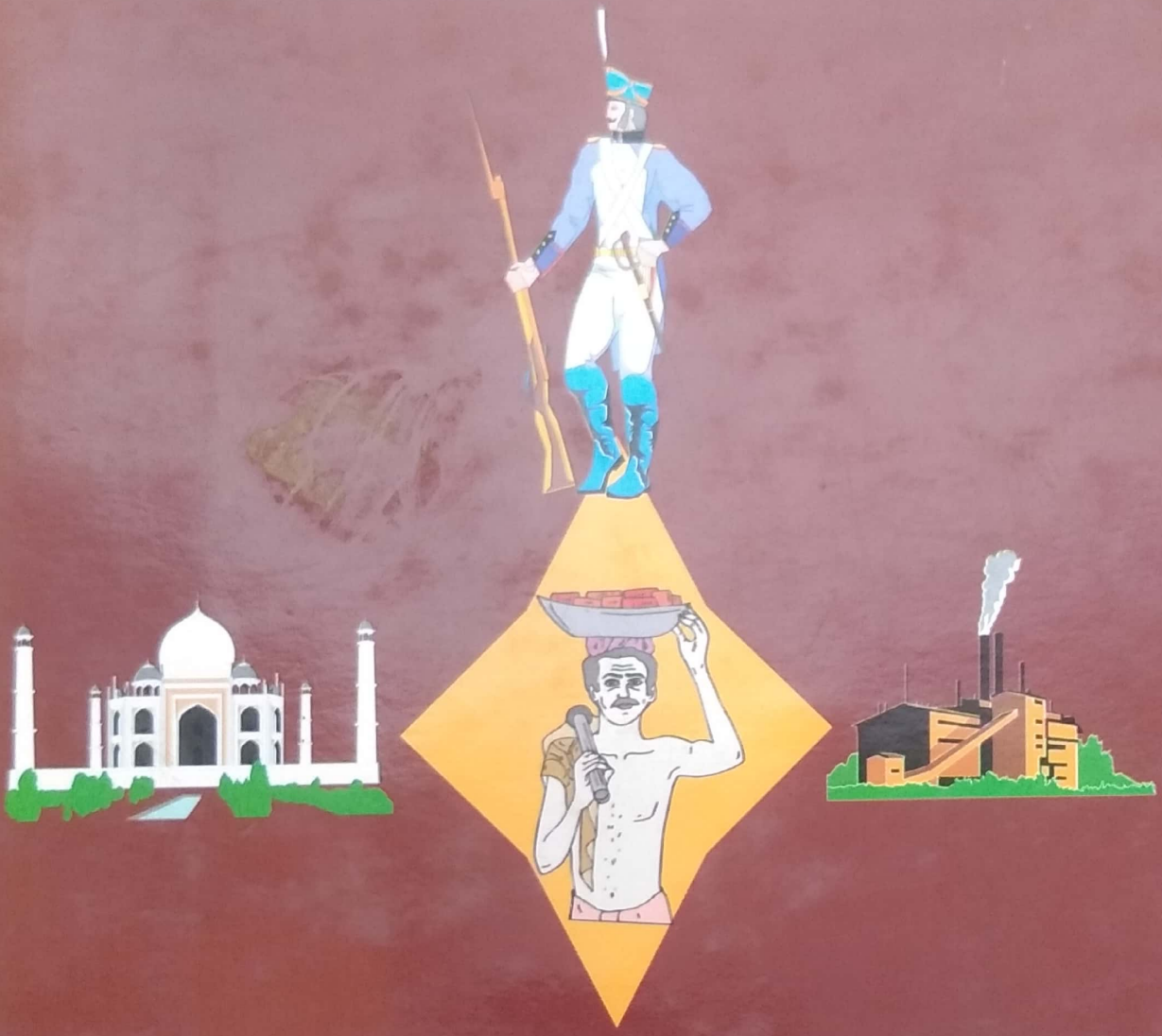

श्रम है ज्ञान श्रमिक ज्ञानी है
युग परिभाषा जानो
शब्द कोश सब बदल गये हैं
हम माने तुम मानो ।

निर्मल चन्द 'निर्मल'

Scanned with OKEN Scanner

पसीना बोलता है

सूक्ष्म धारा बहुत है नदी के लिये
बढ़ चलो दोस्त अगली सदी के लिये
सिर्फ दिल ही नहीं हो मुलाकात को
रूह भी चाहिये दोस्ती के लिये ।

निर्मल चन्द 'निर्मल'

Scanned with OKEN Scanner

पसीना बोलता है

(काव्य संग्रह)

प्रकाशक :

ऐन्डी पब्लिकेशन,

91, गौतम नगर ,पश्चिम निशादपुरा

भोपाल, फोन – 9300687437

प्रथम संस्करण :

वर्ष – 2008

सर्वाधिकार :

ऐन्डी पब्लिकेशन

मूल्य : 75 रू मात्र

मुद्रक : ऐन्डी पब्लिकेशन

Scanned with OKEN Scanner

सूची

1	धरती के आसरे पै टिका आसमान है	1
2	उम्र भर गंगा नहाते	2
3	पारस के हाथ बढ़े	4
4	कहेंगे हम तो श्रम वरदानी	5
5	श्रम का मान बढ़ाओ रे	7
6	पसीना बोलता है	8
7	अनुभूति प्रेम की होन दें	10
8	इन्तजार की नजरें	12
9	चेतना ही चेतना है	14
10	धरा सुबासित होगी	15
11	बुन्देलखण्ड में प्रभात	16
12	गीत का जन्म	17
13	धरती की गोद हरी होवे	19
14	निर्बल किस्मत पर रहते हैं	22
15	रिक्शेवाला	24
16	कितने ही उजयारे दिये	25
17	अपने युग का नाम करें	27
18	बसुधा नीरानीर हुई	29
19	फिर बसन्त आ गया	31
20	गीत लिखो तो ऐसा लिखना	33
21	मैं ताजमहल यमुना तट का	35
22	समूचा यान तेरा है	39
23	बनने में वर्षों लगते हैं	41
24	कुछ तो काम करें	43
25	साँस नहीं टूटी है	45
26	हँस चुगेगा मोती	47
27	प्रकृति में प्रभात	49
28	झुकना नहीं तकरार करना	50

Scanned with OKEN Scanner

29	ये कलम चलेगी उस क्षण तक	51
30	वैसे सुर में हम गायेंगे	53
31	मैं लोकतंत्र हूँ	55
32	घर मेरा हरिद्वार हो गया	56
33	सारा देश पुकारे माझी	58
34	कैसे कह दें अपना देश महान	60
35	कविता देती पंख उड़ाने भरने को	62
36	विगत से ध्यान नहीं हटता है	65
37	मिलने तो आओगे	66
38	ऐसा क्यों होता है	68
39	जब तक मैं जिन्दा हूँ	70
40	पीड़ा और खुशी	71
41	खाली हाथ	72
42	एक क्षण	72
43	घर – 1	73
44	घर – 2	73
45	उड़ना लाजमी है	74
46	जैसा खाओगे अन्न	75
47	आदमी थका नहीं है	76
48	आम आदमी की बात	78
49	साँस–साँस में स्पन्दन है	79
50	बच्चों की फुलवारी	81
51	चन्दा भैया	82
52	गया जी हम नहायेंगे	84
53	सदा फासले मिले	85
54	जब हर्फ–हर्फ पढ़ लिया	86
55	झटका है करारा हमको	87
56	जमाना से बताता है	88
57	एक दिन खुशियाँ भी लाता है	89
58	ऋण तो अदा करो	90
59	वर्तमान को मत कुचलो	91
60	सामयिक दोहे	93

Scanned with OKEN Scanner

नाम – निर्मल चन्द 'निर्मल'
जन्म – 6 मार्च 1931, चकराघाट, सागर (म.प्र.)

पूर्व प्रकाशित काव्य कृतियाँ

1. उठाओ कुदाली
2. और कुछ नहीं हुआ
3. गीत वही लिख पाता है
4. गीत है ये जिन्दगी
5. कुछ ऐसे लोग हुआ करते
6. याद नहीं बिसरी
7. जुगनुओं के पास भी ईमान है
8. प्रीत के सुख – दुख घनेरे

विशेष – श्री दिग्विजय सिंह द्वारा दाजी सम्मान, आल इंडिया स्टूडेन्ट्स फेडरेशन की तरफ से श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा तथा श्री राहुल भैया के द्वारा सम्मानित। दिव्य रजत अलंकरण सम्मान। मध्यप्रदेश लेखक संघ भोपाल की ओर से सारस्वत सम्मान। इनके अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक और सामाजिक संगठनां द्वारा साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित। रेडियो एवं टी.व्ही. से संबद्ध।

स्थाई पता – पुर्वियाऊ टौरी, सागर (म.प्र.)
फोन : 222756, 409058, 9993949714

Scanned with OKEN Scanner